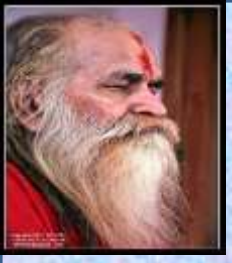

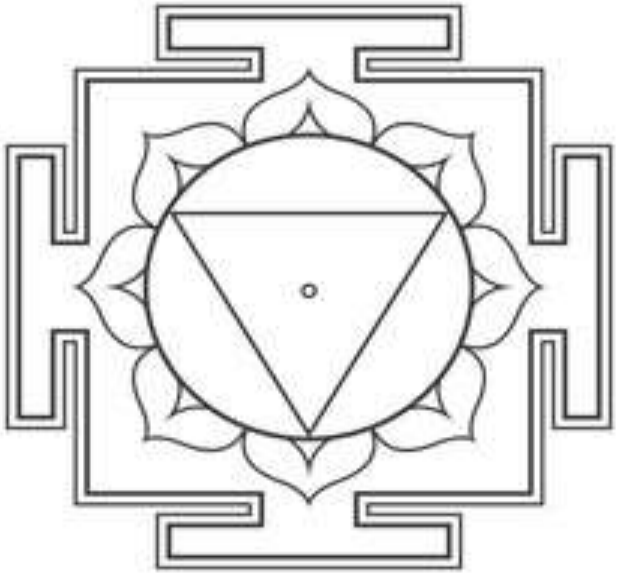

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

श्री ताराम्बा नील सरस्वती
द्वितीय महाविद्या

प्रत्यालीढपदां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम् ।
खर्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्रचर्म्मावृतां कटौ ।।
नवयौवनसम्पन्नां पञ्चमुद्राविभूषिताम् ।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम् ।।

भगवती काली को ही नीलरूपा होने के कारण तारा भी कहा गया है । वचनान्तर से तारा नाम का रहस्य यह भी है कि ये सर्वदा मोक्ष देने वाली, तारने वाली हैं, इसलिए इन्हें तारा कहा जाता है । महाविद्याओं में ये द्वितीय स्थान पर परिगणित हैं । अनायास ही वाक्शक्ति प्रदान करने में समर्थ हैं, इसलिये इन्हें नीलसरस्वती भी कहते हैं । भयंकर विपत्तियों से भक्तों की रक्षा करती हैं, इसलिये उग्रतारा हैं । बृहन्नील-तन्त्रादि गन्थों में भगवती तारा के स्वरूप की विशेष चर्चा है । हयग्रीव का वध करने के लिये इन्हें नील-विग्रह प्राप्त हुआ था । ये शवरूप शिव पर प्रत्यालीढ़ मुद्रा में आरूढ़ हैं । भगवती तारा नीलवर्ण वाली, नीलकमलों के समान तीन नेत्रों वाली तथा हाथों में कैंची, कपाल, कमल और खड्ग धारण करने वाली हैं । ये व्याघ्रचर्म से विभूषिता तथा कण्ठ में मुण्डमाला धारण करने वाली हैं ।

शत्रुनाश, वाक्-शक्ति की प्राप्ति तथा भोग-मोक्ष की प्राप्ति के लिये तारा अथवा उग्रतारा की साधना की जाती है । रात्रिदेवी की स्वरूपा शक्ति तारा महाविद्याओं में अद्भुत प्रभाववाली और सिद्धि की अधिष्ठात्री देवी कही गयी हैं । भगवती तारा के तीन रूप हैं-तारा, एकजटा और नीलसरस्वती । तीनों रूपों के रहस्य, कार्य-कलाप तथा ध्यान परस्पर भिन्न हैं, किन्तु भिन्न होते हुए सबकी शक्ति समान और एक है । भगवती तारा की उपासना मुख्यरूप से तन्त्रोक्त पद्धति से होती है, जिसे आगमोक्त पद्धति भी कहते हैं । इनकी उपासना से सामान्य व्यक्ति भी बृहस्पति के समान विद्वान् हो जाता है ।

भारत में सर्वप्रथम महर्षि वसिष्ठ ने तारा की आराधना की थी । इसलिये तारा को वसिष्ठाराधिता तारा भी कहा जाता है । वसिष्ठ ने पहले भगवती तारा की आराधना वैदिक रीति से करनी प्रारम्भ की, जो सफल न हो सकी । उन्हें अदृश्यशक्ति से संकेत मिला कि वे तान्त्रिक-पद्धति के द्वारा जिसे 'चिनाचारा' कहा जाता है, उपासना करें । जब वसिष्ठ ने तान्त्रिक-पद्धति का आश्रय लिया, तब उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई । यह कथा 'आचार' तन्त्र में वसिष्ठ मुनि की आराधना उपाख्यान में वर्णित है । इससे यह सिद्ध होता है कि पहले चीन, तिब्बत, लद्दाख आदि में तारा की उपासना प्रचलित थी ।

तारा का प्रादुर्भाव मेरु-पर्वत के पश्चिम भाग में 'चोलना' नाम की नदी के या चोलत सरोवर के तटपर हुआ था, जैसा कि स्वतन्त्र तन्त्र में वर्णित है -

मेरोः पश्चिमकूले नु चोत्रताख्यो ह्रदो महान् ।
तत्र जज्ञे स्वयं तारा देवी नीलसरस्वती ।।

'महाकाल संहिता' के काम-कलाखण्ड में तारा-रहस्य वर्णित है, जिसमें तारारात्रि में तारा की उपासना का विशेष महत्त्व है। चैत्र-शुक्ल नवमी की रात्रि 'तारारात्रि' कहलाती है-

चैत्र मासि नवम्यां तु शुक्लपक्षे तु भूपते। क्रोधरात्रिर्महेशानि तारारूपा भविष्यति ।।

बिहार के सहरसा जिले में प्रसिद्ध 'महिषी' ग्राम में उग्रतारा का सिद्धपीठ विद्यमान है। वहाँ तारा, एकजटा तथा नीलसरस्वती की तीनों मूर्तियाँ एक साथ हैं। मध्य में बड़ी मूर्ति तथा दोनों तरफ छोटी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है कि महर्षि वसिष्ठ ने यहीं तारा की उपासना करके सिद्धि प्राप्त की थी। तन्त्रशास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'महाकाल-संहिता'के गुह्य-काली-खण्ड में महाविद्याओं की उपासना का विस्तृत वर्णन है, उसके अनुसार तारा का रहस्य अत्यन्त चमत्कार जनक है।

तारा शब्द का अर्थ है - उबारने वाली। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश इन पाँच क्लेशों से उबारने वाली भगवती तारा हैं। तारा के अन्तर्गत तीन शक्तियाँ उग्रतारा, एकजटा और नीलसरस्वती आती है। भगवती तारा प्रणवरूपा हैं। काली ही नील तेज स्वरूपिणी होने के कारण नीलसरस्वती हैं। काली निष्कलब्रह्म की परिचायक है वहीं तारा सकलब्रह्म की द्योतक हैं।

मन्त्र-परिचय - भगवती तारा का षडक्षर मन्त्र **ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्** है जिसे महर्षि वशिष्ठ द्वारा शापोद्धार किया गया था। इसमें **स्त्रीं** वधू-बीज कहलाता है। इस मन्त्र में **स्त्रीं** के स्थान पर **त्रीं** और **ॐ** हटा देने पर **ह्रीं त्रीं हुं फट्** - यह एकजटा का मन्त्र हो जाता है और **ह्रीं त्रीं हुं** - यह नीलसरस्वती का मन्त्र हो जाता है। यहाँ पूजन क्रम में भगवती के षडक्षर मन्त्र का विधान दिया जा रहा है। तारा के सभी मन्त्रों के ऋषि अक्षोभ्यऋषि है। **ह्रीं** तथा **हुं** को सिद्धिदायक बीज तथा शक्ति माना गया है। मन्त्र महोदधि में भगवती तारा के अन्य कई भेद बताए गए हैं। आगे पूजा प्रकरण में आवरण पूजा से क्रम दिया गया है। साधकगण पूजा के आरम्भ में अन्य शास्त्रोक्त विधानों का पालन करें जैसे - शुद्धिकरण, आचमन, प्राणायाम, सङ्कल्प, पृथ्वीपूजा, देहरक्षा, गुरु-गणपति पूजन, दीप-घण्टा-शङ्ख पूजन, कलश-स्थापन पूजन इत्यादि। न्यास प्रक्रिया यहां दिया जा रहा है परन्तु एकजटा एवं नील सरस्वती हेतु शास्त्र-विहित निर्देशों का अथवा अपने गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करें। **ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्** - यह तारादेवी का गायत्रीमन्त्र है जिसका अर्थ है - हम महान उग्र स्वरूप वाली तारादेवी का ध्यान करते हैं। वे देवी हमारी चित्तवृत्ति को अपने ही ध्यान में, अपनी ही लीला में लगाये रखें।

भगवती तारा की उपासना पहले चीन, तिब्बत, लद्दाख आदि में प्रचलित था। तिब्बत में सर्वश्रेष्ठ साधनाओं में देवी मणिपद्मा को आराध्या माना गया है जो कि भगवती तारा ही हैं। इनकी साधना अत्यन्त कठिन मानी गयी है और नियमों पालन भी अनिवार्य है। अतः सामान्य साधकवर्ग को ध्यान, कवच, हृदय, नामावली इत्यादि स्तोत्रों का पाठ ही कर लेने से देवी का अनुग्रह प्राप्त हो जाता है। उनकी उपासना रात्रि में करने का ज्यादा महत्त्व है।